eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

समकालीन कविता में पर्यावरणीय चेतना

प्रो0 इन्दु यादव[1]
[1]प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, दयानन्द गर्ल्स पी0जी0 कॉलेज, कानपुर, उ0प्र0

Received: 24 Oct 2024 Accepted & Reviewed: 25 Oct 2024, Published : 31 Dec 2024

Abstract

पर्यावरण वह है जो कि प्रत्येक जीव के साथ जुड़ा हुआ है और हमारे चारों तरफ वह हमेशा व्याप्त होता है। सामान्य अर्थों में यह हमारे जीवन को प्रभावित करने वाले सभी जैविक और अजैविक तत्वों, तथ्यों प्रक्रियाओं और घटनाओं के समुच्चय से निर्मित इकाई है।

कीवर्ड– पर्यावरण, समकालीन कविता, पर्यावरणीय चेतना

Introduction

हिन्दी साहित्य में आदिकाल से ही प्रकृति और पर्यावरण से प्रेम व संरक्षण की बात कही गयी। हिन्दी साहित्य अपनी गहनता और विविधता के साथ हमें प्रकृति और पर्यावरण के महत्व को समझाने में सहायक है। पर्यावरण न केवल हमारी जीवन शैली का एक अभिन्न अंग है, बल्कि यह हिन्दी साहित्य में प्रेरणा स्रोत रहा है। विश्व पर्यावरण स्वास्थ्य दिवस का उद्देश्य हमें पर्यावरण संरक्षण के लिये प्रेरित करना।

जैसे जल संरक्षक पर रहीमदास कहते हैं–

रहिमन पानी राखिये बिनु पानी सब सून,
पानी गये न ऊबरै, मोती मानुष चून।

रहीमदास कहते हैं कि हमें पानी की कद्र करनी चाहिये बिना पानी के सभी चीजे अधूरी होती है। जैसे कि अनुपजाऊ भूमि। पर्यावरण एवं प्रकृति साहित्य में हमेशा से ही मौजूद रहे हैं। फिर चाहे फूलों का लेखन हो अथवा प्राकृतिक परिवेश में किसानों की जीविका की बात हो। अमततास, पलाश, अपराजिता, हरसिंगार इन सभी पुष्पों का साहित्य में उल्लेख किया गया। मनुष्य का पर्यावरण के साथ बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध है। पर्यावरण अपने व्यापक अर्थ में जल, वायु, अंतरिक्ष सबको समेटे हुये। हम सभी पर्यावरण से घिरे हैं। पर्यावरण के बिना हमारा अस्तित्व संभव नहीं। मनुष्य और पर्यावरण दोनों एक दूसरे के पूरक है। एक के बिना दूसरे की कल्पना संभव नहीं। बल्कि पर्यावरण से जीते हैं। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं है कि हमारा पर्यावरण ही हमें जीवन प्रदान करता है।

महाकवि कालिदास ने अभिज्ञान शाकुन्तलम के मंगलाचरण में कहा– **'प्रत्यक्षाभि प्रपन्न स्तुनुमिरस्तुवस्ता मिरष्टामिरीश'** कालिदास ने जल, वायु, अग्नि आदि पर्यावरण के तत्वों को ईश्वर का प्रत्यक्ष स्वरूप कहकर अभिनंदित किया है। भारतीय चिंतन परम्परा की एक खास पहचान रही है। हम पर्यावरण से जीवन का अमृत रस तो लेते हैं लेकिन बदले में विष देते हैं, उसमें जहर घोल देते हैं। आज पवित्र पूजनीय गंगा नदी उद्योगों के कचरे से प्रदूषित होती जा रही है। कई नदियाँ हैं जिनका अस्तित्व संकट में है, कई तो अपना अस्तित्व खोती जा रही है। भारतीय संस्कृति में पर्यावरण को आदिकाल से ही प्रमुख स्थान दिया गया है। भारतीय धर्म, दर्शन, संस्कृति, समाज और साहित्य सदैव जागरूक रहे हैं। मानव जीवन एवं पर्यावरण एक

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

दूसरे के पर्याय हैं। जहां मानव का अस्तित्व पर्यावरण से है, वहीं मानव द्वारा निरंतर किये जा रहे पर्यावरण के विनाश से हमें भविष्य की चिंता सताने लगी। हमारे प्राचीन वेदों ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद में पर्यावरण के महत्व को दर्शाया गया है। पर्यावरणीय चेतना और समकालीन कविता में अंतः सम्बन्ध है। कविता और पारिस्थितिकी भी इससे अछूती नहीं है। समाकलीन कविता में हवा, पानी और मनुष्य जीवन के अंतःसूत्र वर्णित है। कविता का प्रकृति से घनिष्ठ सम्बन्ध है। मौसम में हो रहे अनचाहे परिवर्ततनों से पर्यावरण की परिस्थितिकी प्रभावित हो रही है। प्रकृति में इसके फलस्वरूप ही अजग–गजब परिवर्तन हो रहे हैं। **'इतने दिनों से कोई फूल नहीं देखा'** शीर्षक से प्रस्तुत कविता में समकालीन कवि विजेन्द्र ने परिस्थितिकी के बिगड़ने से फल–फूलों की प्रभावित प्राकृतिक अवस्था पर चिंता व्यक्त की है–

''इतने दिनों से कोई फूल नहीं देखा कोई रक्त कुसुम,
कोई बौर का गुच्छा,
दोआबा में उन्हें छोड़ आया हूँ,
यहां देखता हूँ खसां मिट्टी का परकोटा।।''

कुएँ जल के प्राकृतिक स्रोत रहे हैं। आज इन कुँओं का अस्तित्व मिटता जा रहा है। पेयजल के दूसरे साधन उपलब्ध हो गये हैं। प्राकृतिक जल स्रोतों से परिस्थितिकी का खासा मेल–जोल रहा है, लेकिन अब इनके नष्ट होने से प्रकृति का ही नहीं जल का संतुलन भी गड़बड़ा गया है। मनुष्य की पशुता से धरती और आकाश उसी के लिये घातक बनते जा रहे हैं। मनुष्य के इनके प्रति पाप और अनाचार और भी बढ़ रहे हैं। मनुष्य द्वारा किये जा रहे लगातार दोहन और करतूतों से धरती कांप रही है। बिगड़ते जलवायु के कारण ही प्रकृति की सुषमा और हरीतियों पर ग्रहण लग रहा है। इनके परिणाम स्वरूप अनेक प्रकार की जंगल की वनस्पतियाँ संकट में हैं। वह दिन दूर नहीं जब पशुओं के लिये चारे का संकट उत्पन्न हो जायेगा। समकालीन ऋतुराज की कविता 'सूखा' में व्यक्त किया–

''आदमी तो कुछ भी कर लेगा,
पशुओं को चारा चाहिए
वे आदमी को देखते हैं कातर दृष्टि से
अंततः उसे कुछ तो करना ही पड़ेगा।''

मनुष्य और जीवों का आपसी सम्बन्ध पर्यावरण की परिस्थितिकी के संतुलन को बनाये रखने में कितना जरूरी है। विजय देव नारायण साही की कविता **'कौवे साधारण पक्षी'** के द्वारा प्रकृति और मनुष्य के साहचर्य के रूप में वर्णित किया है–

''मेरे कस्बे में कौवे बड़ा नास करते हैं,
सवेरे मुंडेर पर बोलते हैं, संदेश पहुंचाते हैं।''

आषाढ़ की शाम को आसमान से नीले बादल बरसते हैं, इसके बाद रात्रि वातावरण में मधुमय चांदनी का बसेरा होता है। हरिनारायण व्यास की कविता **'वर्षा के बाद'** में प्रकृति और बारिश के पर्यावरणीय समायोजन को दर्शाया है–

'पहली आषाढ़ की संध्या में,
नीलांजन बादल बरस गये।'

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

पर्यावरण का पारिस्थितिक संतुलन गड़बड़ा जाने से भूकंप आ रहे हैं। असमय बारिश हो रही है। बाढ़ आ रही है, वातावरण दूषित हो रहा है, आखिर कब तक निर्मम चक्र चलता रहेगा। सुनामी लहरों का तूफान पर्यावरण की बिगड़ी पारिस्थितिकी का ही परिणाम है। देखते देखते क्षण भर में ही हजारों लोग काल के गाल में समा गये। इस भयावह बवंडर का दंश आज तक भी पीड़ित लोग नहीं भूले। कवि सतीस जायसवाल का चिंतन–

'समुद्र निकल आया वहां अभी अभी,
कहां चली गयीं यहां की इमारतें।'

प्रकृति के साथ ज्यादा छेड़छाड़ उचित नहीं है। प्राकृतिक उत्पाद और वस्तुएँ के परिवेश ही ज्यादा उचित और सुरक्षित रहती हैं। यदि हम उनके साथ खिलवाड़ करने का प्रयास करते हैं तो इससे परिस्थितिकी का संतुलन बिगड़ जाता है। समकालीन कवि केदारनाथ सिंह ने **'ठंड से नहीं मरते शब्द'** के माध्यम से बताया–

'मुझे एक बाद। एक खूब लाल,
पक्षी जैसा शब्द। मिल गया गांव के कच्छार में।'

खेती में अंधाधुंध खाद और रसायनों का प्रयोग करके मनुष्य ने भरपूर पैदावार प्राप्त कर ली है। इससे उसके पेट की भूख तो शांत कर ली परन्तु पानी की आवश्यकता को नजरअंदाज कर दिया। खेती की अधिक पैदावार के लिए बड़े पैमाने पर जल का दोहन हो रहा है। इसका परिणाम यह हुआ कि पानी का अभाव हो गया। समकालीन कवि एकांत श्रीवास्तव की कविता में स्पष्ट देखने को मिलता है–

'अब तक हम अपनी भूख से लड़ते थे,
अब हमें अपनी प्यास से भी लड़ना होगा।'

पानी प्रकृति का हो या मानव शरीर का दोनों ही स्थिति में इसकी कमी अपना असर दिखाती है। हरी पत्तियों को भोजन के लिए जिस प्रकार हवा और उष्मा की आवश्यकता होती है। उसी तरह मनुष्य को भी पानी की अपरिहार्य आवश्यकता होती है।

धरती के साथ हो रही छेड़छाड़ और अवैध दोहन से हवा, पानी, धरती और वायुमण्डल का विस्तार कम हो रहा है। इसके प्रति गंभीर होना पड़ेगा नहीं तो भयानक परिणाम भुगतने होंगे। कवि नवल शुक्ल की कविता 'धरती से विदा में' हवा और पानी की कमी पर दुःख व्यक्त किया।

'कम हो रही कुछ चीजें लगातार,
कुछ वस्तुएँ कुछ नाम,
बहुत कम हो रहा है हमारा संसार,
हवा कम हो रही है।'

पानी के बिना नर और पशु का अस्तित्व नहीं है। यही स्थिति रही तो एक दिन हम बूंद–बूंद पानी को तरस जायेंगे। पानी पर जिसका जितना अधिक आधिपत्य रहेगा वही धरती पर सीना तान कर खड़ा हो सकेगा। पानी मानव जीवन की पहली आवश्यकता नहीं बल्कि सृष्टि की पहली आवाज है। समूचा भूमण्डल जल के बिना अधूरा है। पानी मानव प्रकृति की मूल आवश्यकता नहीं वरन प्राकृतिक संतुलन का एक बहुत आवश्यक घटक है। समकालीन कविता में हवा और पानी मनुष्य और जीवन उसकी अंतः चेतना के अनेक स्वर सुनायी पड़ते हैं। आज मशीनरी युग का मनुष्य गम्भीरता से नहीं ले रहा। जबकि यह मामला

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

बहुत गम्भीर है। मनुष्य जीवन के अंतः सूत्र प्रकृति से ही प्राप्त होते हैं। मनुष्य और प्रकृति का घनिष्ठ सम्बन्ध है। प्रकृति से दूर होना मनुष्य के हित में नहीं है। मनुष्य जितना प्रकृति से दूर रहेगा उसके लिये मुश्किलें उतनी बढ़ जायेगी।

मानवीय सभ्यता की दौड़ ने प्रकृति की पारिस्थितिकी पर सबसे बड़ा हमला किया है।

आधुनिकता ने सौन्दर्य सम्बन्धी जिन मानकों की रचना की वे सभी विमर्श में अप्रासंगिक हो गये हैं। आधुनिक युग के ज्यादातर मनुष्य निजी स्वार्थ और लिप्सा से संलिप्त हैं। उसे आवश्यकताओं की चिंता नहीं है। पानी का संकट काफी वर्षों से देखा जा रहा है। आने वाला समय और भी त्रासदी पूर्ण रहेगा। अंततः पारिस्थितिकी एक प्राकृतिक इकाई है, जिसमें एक क्षेत्र विशेष के सभी जीवधारी अर्थात् पौधे, जानवर और अणुजीव शामिल होते हैं। जो कि अपने जैव–अजैव पर्यावरण के साथ अंतर्क्रिया करके एक सम्पूर्ण जैविक इकाई बनाते हैं। पारिस्थितिकी के अन्तर्गत जीव और उसके वातावरण के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है। कविता का सम्बन्ध पारिस्थितिकी से है। हरे भरे जंगल जलने से पर्यावरण की पारिस्थितिकी का संकट उत्पन्न हो रहा है। जंगल की इस आग पर हर बुद्धिजीवी का चिंतित होना आवश्यक है। समकालीन आधुनिक कविता में वैसे तो कवियों ने देशकाल परिस्थितियों के अनुरूप अनेक प्रकार की समस्याओं, मुद्रों और अन्य आवश्यक पहलुओं पर अपनी कविताओं के स्वर उजागर किया है। उनकी कविताओं में पर्यावरण जनित और मनुष्य जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक मूलभूत वस्तुओं के प्रति भी चिंतन का स्वर मुखर हुआ है। इन आवश्यकताओं में हवा, पानी और मनुष्य जीवन के अंतः सूत्रों का भी समुचित वर्णन हुआ है। समकालीन कविता में हवा, पानी और मनुष्य जीवन और उसकी अंतःचेतना के अनेक स्वर सुनाई पड़ते हैं। पर्यावरणीय संतुलन मानवजनित और प्राकृतिक जनित दोनों कारणों से प्रभावित होता है।

चेनोबिल परमाणु विस्फोट, हिरोशिमा नागासाकी बम विस्फोट, भोपाल गैस त्रासदी, चीन की बाढ़ और उत्तराखण्ड में बादल फटने की घटनाएँ पर्यावरणीय असंतुलन की प्राकृतिक मानवजनित बड़ी घटनायें हैं। रोजगार का संकट तनाव, परिवारों में अलगाव, एकाकी परिवार और आवश्यकताएँ पूरी होना आदि अनेक समस्यायें मनुष्य की है। व्यावसायिक और आधुनिक दृष्टिकोण के चलते मनुष्य की मानवीय संवेदनाएँ समाप्त हो रही है। समकालीन कविता भी इन प्रसंगों से अछूती नहीं है। उसमें जनसमूह में बढ़ते एकाकी जीवन के संदर्भ में भी यत्र तत्र देखने को मिलते हैं।

संदर्भ सूची–

1. पारिस्थितिकी, विकीपीडिया।
2. पर्यावरण डाइजेस्ट, हिन्दी भारत, ऑनलाइन संस्करण।
3. काव्य चयनिका, भाग–1, सं0 प्रमोद कोपव्रत, लोकभारती, प्रकाशन।
4. समकालीन कविता के ..... हस्ताक्षर, सरजूप्रसाद, अमन प्रकाशन, कानपुर।
5. समकालीन कविता संवेदना और विमर्श, वेद प्रकाश अमिताभ।
6. लेख, जागरण डॉट कॉम
7. लेख, बीबीसी डॉट कॉम